وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -24

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

24 जुल् हज्जा 1447 हिज्री कमरी, 11 अहसान 1405 हिज्री शम्सी, 11 जून 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ يُّطۡفِـُٔوۡا نُوۡرَ اللّٰہِ بِاَفۡوَاہِہِمۡ وَيَاۡبَى اللّٰہُ اِلَّاۤ اَنۡ يُّتِمَّ نُوۡرَہٗ وَلَوۡ كَرِہَ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۳۲﴾

(सूरह तौबा:32)

अनुवाद: वे चाहते हैं कि खुदा तआला के नूर को अपने मुँहों से बुझा दें, और खुदा तआला हर दूसरी बात को अस्वीकार करता है, सिवाय इसके कि वह अपने नूर को पूरा कर दे, चाहे काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे।

जिस मुसलमान के बारे में चार व्यक्ति भलाई की गवाही दें, उसे अल्लाह जन्नत में दाखिल कर देता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अबुल-असवद से रिवायत है कि मैं मदीना आया, और वहाँ महामारी फैली हुई थी और लोग बुरी मौत मर रहे थे। मैं हज़रत उमर (रज़ि.) के पास बैठ गया। इतने में एक जनाज़ा गुज़रा। उसकी अच्छी तारीफ़ की गई, तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा: "वाजिब हो गई।" फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा और उसकी भी अच्छी तारीफ़ की गई, तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा: "वाजिब हो गई।" फिर तीसरा जनाज़ा गुज़रा और उसकी बुराई बयान की गई, तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा: "वाजिब हो गई।"

मैंने पूछा: "अमीरुल मोमिनीन! यह 'वाजिब हो गई' क्या है?"

उन्होंने कहा: "मैंने वही कहा है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया था। जिस मुसलमान के बारे में चार व्यक्ति भलाई की गवाही दें, अल्लाह उसे जन्नत में दाखिल कर देता है।"

हमने पूछा: "और तीन के बारे में?" आपने फरमाया: "तीन के बारे में भी।"

हमने कहा: "और दो के बारे में?" आपने फरमाया: "दो के बारे में भी।"

फिर इसके बाद हमने एक के बारे में नहीं पूछा।

याद रखो कि खुदा तआला की आदत इसी तरह की है कि अंत में जीत हमेशा खुदा के बंदों की ही होती है। हत्या की साज़िशें, कुफ़्र के फ़तवे, और तरह-तरह की तकलीफ़ें उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकतीं।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मनुष्य को नष्ट करने वाली चीज़ों में से एक बुरी संगति भी है। देखो, अबूजहल स्वयं तो नष्ट हुआ ही, लेकिन उसके साथ बैठने वाले और भी बहुत से लोगों को भी ले डूबा। उसकी संगत और उसकी सभा में मज़ाक और हँसी-ठिठोली के अलावा कोई बात ही नहीं होती थी। वे यही कहा करते थे:

"اِنَّ هٰذَا لَشَیۡءٌ یُّرَادُ" "यह तो बस एक बनावटी धंधा है।"

अब देखो और बताओ कि जिसे वे व्यापारी और ठग कहा करते थे, आज पूरी दुनिया में उसका ही नूर (प्रकाश) है या किसी और का भी? अबूजहल मर गया और उस पर केवल लानत ही बाकी रह गई।

लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँची शान देखो कि दिन-रात, बल्कि हर समय उन पर दुरूद पढ़ा जाता है और 99 करोड़ मुसलमान उनके सेवक के रूप में मौजूद हैं।

अगर अब अबूजहल फिर आकर देखता कि जिसे वह मक्का की गलियों में अकेला घूमता देखता था, और जिसे सताने में उसने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी, आज उसके साथ 99 करोड़ इंसानों का विशाल समूह है, तो वह आश्चर्य से रह जाता और यह दृश्य ही उसे नष्ट कर देता।

यह आपके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई का प्रमाण है। अगर खुदा तआला साथ न होता, तो यह सफलता कभी प्राप्त न होती।

आपके खिलाफ कितनी ही कोशिशें और योजनाएँ बनाई गईं, लेकिन अंततः सब असफल और निराश होकर रह गईं।

शुरुआत के उस समय में, जब आपके साथ केवल कुछ ही लोग थे, कौन सोच

शेष पृष्ठ 6 पर

इस्लाम ने यह आदेश दिया है कि हर व्यक्ति अपने माल का एक हिस्सा ज़रूरत के अनुसार ज़कात के रूप में अवश्य दे, ताकि सरकार उसे पूरी मानवजाति की आवश्यकताओं के लिए साझा रूप से खर्च करे।

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरह अल-मोमिनून आयत नंबर 5 وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ की तफसीर में फरमाया है:

फिर बताया कि मोमिन इससे भी आगे बढ़कर उस स्थान तक पहुँच जाते हैं जहाँ वे अपने माल को गरीबों की तरक्की के लिए हमेशा खर्च करते रहते हैं।

दरअसल इस्लाम का यह विचार है कि दुनिया में जितनी भी चीज़ें पाई जाती हैं, वे सभी खुदा तआला ने पूरी मानवजाति के साझा लाभ के लिए पैदा की हैं। किसी एक व्यक्ति के लिए विशेष नहीं की गईं। और क्योंकि हर प्रकार की दौलत जो दुनिया में प्राप्त की जाती है वह दूसरों की मदद से प्राप्त होती है, और मज़दूर की मज़दूरी अदा करने के बाद भी धनवान के माल में उनका हक़ बाकी रह जाता है, इसलिए इस्लाम ने ज़कात का आदेश दिया है ताकि मानव-धन दूसरों के अधिकारों की मिलावट से पाक हो जाए।

उदाहरण के तौर पर, किसी खदान का मालिक यदि उन सभी मज़दूरों को जो खदान में काम करते हैं उनकी पूरी मज़दूरी भी

शेष 6 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ब्रिटेन की जमाअत अहमदिया के 19वें पीस सिम्पोज़ियम, 16 मई 2026 के अवसर पर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दूरदर्शी भाषण का सारांश

इस्लाम की बुनियादी शिक्षा यह है कि मनुष्य दूसरों के लिए भी वही पसंद करे जो वह अपने लिए पसंद करता है।
यह ऐसा स्वर्णिम सिद्धांत है कि यदि दुनिया इस सिद्धांत पर चलने लगे तो दुनिया वास्तव में शांति का केंद्र बन सकती है।
सामंजस्य और न्याय के लिए प्रयास करना जमाअत अहमदिया का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है, जिसके लिए हम लगातार प्रयास करते रहते हैं। इसी महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम यह प्रयास भी करते हैं कि भले ही थोड़े ही सही, कुछ लोगों तक हमारा यह हक और न्याय का संदेश पहुँच सके। यही उद्देश्य है जिसके लिए मैंने दुनिया के बड़े नेताओं को पत्र लिखे।
इस्लाम ने केवल मित्रों के अधिकार ही स्थापित नहीं किए, बल्कि विरोधियों के भी अधिकार स्थापित किए हैं।
इस्लाम ने अपने मानने वालों को यह नसीहत दी है कि यदि तुम्हें बुद्धिमत्ता और ज्ञान की बात किसी अन्य समुदाय से मिले तो उसे ले लो, क्योंकि वह तुम्हारी ही खोई हुई विरासत है।
आज हम सभी का कर्तव्य है कि अपने बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए एक शांतिपूर्ण दुनिया छोड़ें और इसके लिए अपनी-अपनी कोशिश करें।
अन्यथा बाद में आने वाली पीढ़ियाँ हमें दोषी ठहराएँगी और कहेंगी कि तुमने हमारे लिए कैसी विनाशकारी दुनिया छोड़ दी है।

तअव्वुज़ और तस्मिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि:

"सम्मानित मेहमानो! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू

मैं दिल की गहराइयों से आप सभी मेहमानों का धन्यवाद करता हूँ कि आप आज हमारे साथ इस समारोह में शामिल हो रहे हैं। जमाअत-ए-अहमदिया पिछले दो दशकों से पीस सिम्पोज़ियम का आयोजन कर रही है और अब दुनिया के बिगड़ते हुए हालात के संदर्भ में लोग यह सवाल करते हैं कि इन सभी प्रयासों का वास्तव में क्या व्यावहारिक लाभ हुआ? यह सवाल पूछना निश्चित रूप से सही है, लेकिन हमें तो इस्लाम ने यह शिक्षा दी है कि हम लगातार बिना थके और बिना ऊबे प्रयास करते रहें। इसलिए दुनिया में सकारात्मक परिवर्तन और मानवता के अस्तित्व के लिए किए जाने वाले प्रयासों से बेहतर और कौन-सा प्रयास हो सकता है।

यदि हम युद्ध, अशांति, उपद्रव, नफरत और अन्याय को रोकने का प्रयास नहीं करेंगे तो हम धीरे-धीरे सभ्यता और संस्कृति को अपनी आँखों के सामने नष्ट होता हुआ देखेंगे। इस विनाश के प्रभाव इतने भयानक होंगे कि आने वाली कई पीढ़ियाँ इससे प्रभावित होंगी। द्वितीय विश्व युद्ध की तबाही का विवरण अत्यंत दिल दहला देने वाला है, लेकिन याद रहे कि उस समय केवल अमेरिका ही एकमात्र देश था जिसके पास परमाणु हथियार थे, जबकि आज कई देश ऐसे हैं जिनके पास परमाणु शक्ति है। और आज के परमाणु हथियार उस समय के हथियारों से कहीं अधिक खतरनाक और विनाशकारी हैं।

आज मैं कुछ शोधकर्ताओं और पर्यवेक्षकों के विश्लेषण आपके सामने प्रस्तुत

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"हमारे सैय्यद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही सच्चाई और वफ़ा देखिए! आपने हर प्रकार की गलत प्रवृत्तियों का मुकाबला किया। तरह-तरह की कठिनाइयाँ और तकलीफ़ें उठाईं, लेकिन परवाह नहीं की। यही सच्चाई और वफ़ा थी जिसके कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 अप्रैल 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सत्य के उच्च मानकों के संदर्भ में आपके उस्वा-ए-हसन और मोमिनों को नसीहत और हिदायत का उल्लेख पिछले ख़ुत्बे में हुआ था। इस संबंध में आज भी मैं कुछ और कहूँगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें सच्चाई के किन उच्च मानकों तक पहुँचाना चाहते हैं, इस बारे में एक रिवायत में आता है। हफ़्स बिन आसिम से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"आदमी के झूठा होने के लिए यही निशानी काफ़ी है कि वह हर सुनी-सुनाई बात लोगों में बयान करता फिरे।"

(सही मुस्लिम, मुक़द्दिमा, बाब अन-नही अन अल-हदीस बिकुल्ली मा समिअ, हदीस 05)

अब देखिए! यह आदत आम तौर पर लोगों में होती है। जमात में भी यह बुराई कुछ लोगों में बहुत ज़्यादा है। मुझे भी कुछ लोग किसी के बारे में लिख देते हैं कि उसने यह किया और वह किया। और जब जाँच की जाती है तो बात गलत निकलती है। और जब लिखने वाले से पूछा जाए कि तुम्हें किसने बताया? यह बात तो गलत है, तो कह देते हैं कि हमने सुना था, और उसी सुनी हुई बात पर वे दुनिया में शोर मचा देते हैं। ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों को झूठा क़रार दिया है।

फिर एक रिवायत में आता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा को झूठ से बढ़कर कोई आदत अधिक नापसंद नहीं थी। यदि कोई व्यक्ति नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने झूठ बोल देता तो वह बात आपके दिल में रह जाती। आपको पता होता कि झूठ बोला है और आपको उसका बहुत दुख होता और आप उसे महसूस करते और दिल में रखते थे, यहाँ तक कि आपको यह मालूम हो जाता कि उसने तौबा कर ली है, सुधार कर लिया है और झूठ बोलने से पूरी तरह बचना शुरू कर दिया है।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हनबल, जिल्द 8, पृष्ठ 280, हदीस 25698, मकतबा आलम अल-कुतुब)

एक रिवायत में आता है, हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक महिला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आई और उसने निवेदन किया: मेरी एक सौतन है, यानी मेरे पति की दूसरी पत्नी है, तो क्या मेरे लिए कोई गुनाह है कि मैं अपने पति के माल से अपने भरपूर होने का प्रदर्शन करूँ? मैं उसके सामने यह ज़ाहिर करूँ कि मेरे पति मुझे बहुत देते हैं, यह देते हैं, वह देते हैं, जबकि वास्तव में उन्होंने मुझे वह नहीं दिया होता। सिर्फ उसे जलाने और परेशान करने के लिए ऐसा करती हूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति उस चीज़ से भरपूर होने का प्रदर्शन करता है जो उसे दी नहीं गई, वह ऐसा है जैसे उसने झूठ के दो कपड़े पहन रखे हों।" क्योंकि उसने भावनात्मक तकलीफ़ देने और जलाने के लिए यह बात कही थी। बहरहाल आपने फ़रमाया कि यह बिल्कुल गलत बात है।

(सही मुस्लिम, किताबुल लिबास वज़-ज़ीनत, बाब अन-नही अन अत-तज़वीर... अनुवादित, जिल्द 11, पृष्ठ 233, हदीस 3959, प्रकाशक नूर फ़ाउंडेशन)

इसकी व्याख्या में लिखा है कि "कपड़े" का शब्द यहाँ उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल हुआ है। इसका अर्थ यह है कि वह व्यक्ति झूठ और धोखे से काम लेने वाला है। उसने झूठ के दो कपड़े पहन रखे हैंएक ओढ़ रखा है और दूसरा तहबंद बनाया हुआ है, यानी नीचे बांधा हुआ है। अर्थात वह सिर से पाँव तक झूठा है।

(उम्दतुल क़ारी, जिल्द 20, पृष्ठ 289–290, मकतबा दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत; फ़तहुल बारी, जिल्द 9, पृष्ठ 228–229, मकतबा दारुल रिय्यान लिल-तरास)

इस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बहुत बारीकी से अपने अनुयायियों को झूठ से बचने की नसीहत फ़रमाई।

एक रिवायत में आता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "चार आदतें जिस व्यक्ति में हों वह पूरा मुनाफ़िक़ होता है, और जिस में इन में से एक आदत हो उसमें निफ़ाक़ की एक निशानी होगी जब तक वह उसे छोड़ न दे: जब उसके पास अमानत रखी जाए तो वह खयानत करता है, जब बात करता है तो झूठ बोलता है, जब वादा करता है तो वादा तोड़ देता है, और जब झगड़ता है तो गाली देता है।"

(सही बुखारी, किताबुल ईमान, बाब अलामतुल मुनाफ़िक, अनुवादित, जिल्द 1, पृष्ठ 80–81, हदीस 34, प्रकाशक नज़ारत-ए-इशाअत)

ये सारी बातें ऐसी हैं जो किसी न किसी तरह सीधे या परोक्ष रूप से झूठ की ओर ले जाने वाली हैं या उनसे झूठ का प्रदर्शन होता है। इसलिए ये नैतिक कमज़ोरियाँ निफ़ाक़ की निशानियाँ हैं। अब इसको सामने रखकर हमें अपना जायज़ा लेना चाहिए कि हममें यह कमज़ोरियाँ किस हद तक हैं, क्योंकि ये चीज़ें निफ़ाक़ की ओर ले जाती हैं, और कोई भी व्यक्ति मुनाफ़िक़ कहलाना पसंद नहीं करता।

फिर गलत बातें फैलाने वालों के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बहुत सख़्त चेतावनी दी है।

एक रिवायत में आता है। हज़रत समुरा बिन जुंदुब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने सहाबा से अक्सर पूछा करते थे: "क्या तुम में से किसी ने कोई सपना देखा है?" हज़रत समुरा कहते हैं कि आप यह प्रश्न करते थे, फिर लोग जो अल्लाह चाहता था बयान करते थे।

एक दिन सुबह आपने फ़रमाया: "आज रात मैंने एक दृश्य देखा कि दो व्यक्ति मेरे पास आए, उन्होंने मुझे उठाया और कहा चलो।" मैं उनके साथ चल पड़ा। हम एक व्यक्ति के पास आए जो अपनी पीठ के बल लेटा हुआ था, और उसके पास एक व्यक्ति लोहे का काँटा लिए खड़ा था। वह काँटे से उसके एक तरफ़ के मुँह को फाड़ता था और उसे गुद्दी तक चीर देता थाउसका नथना और आँख भी गुद्दी तक चीर देता था। फिर दूसरी तरफ़ जाता और वही करता। जब एक तरफ़ ठीक हो जाती तो फिर पहले जैसी हो जाती, और वह फिर वही करता।

मैंने कहा: "सुब्हानअल्लाह! यह कौन लोग हैं?" तो उन दोनों ने बताया: "जिस व्यक्ति के पास तुम आए थे, वह ऐसा व्यक्ति है जो अपने घर से सुबह निकलता है और एक झूठी बात गढ़ता है जो चारों ओर फैल जाती है।"

(सही बुखारी, किताबुत-ताबीर, बाब ताबीरुर-रुया बअद सलातिस-सुबह, अनुवादित, जिल्द 16, पृष्ठ 246–252, हदीस 7047, प्रकाशक नज़ारत-ए-इशाअत)

"अफवाहें फैलाने वाला और लोगों के बारे में गलत बातें करने वाला।"

कुछ लोग केवल अपनी ज़बान के स्वाद या मज़े के लिए बातें करते हैं, और

कभी-कभी किसी को समाज में बदनाम करने के लिए भी बातें की जाती हैं। किसी भी स्थिति में वे नुकसान पहुँचाने के इरादे से बात कर रहे होते हैं। इसलिए ऐसे लोगों को हमेशा याद रखना चाहिए कि यह काम पकड़ में आने वाला है। अल्लाह तआला इसकी पकड़ करता है और इसकी सज़ा देता है। इसलिए यह बहुत डर का स्थान है और बहुत अधिक इस्तिग़फ़ार की ज़रूरत है।

अब्दुल्लाह बिन हारिस से एक रिवायत है। उन्होंने यह रिवायत हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुँचाई। उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: बेचने वाला और खरीदने वाला दोनों को सौदा तोड़ने (खत्म करने) का अधिकार होता है, यानी जो भी सौदा किया गया हो उसे समाप्त करने का अधिकार रहता है, जब तक कि वे एक-दूसरे से अलग न हो जाएँ। जब तक वे साथ हैं तब तक ऐसा संभव है, लेकिन जब अलग हो जाएँ तो फिर यह अधिकार नहीं रहता। या आपने फ़रमाया: जब तक वे अलग न हो जाएँ। अगर दोनों ने सच्चाई अपनाई और साफ़-साफ़ बात की तो उनके व्यापार में उनके लिए बरकत दी जाती है। और अगर दोनों ने छुपाया और झूठ बोला तो उनके व्यापार की बरकत खत्म कर दी जाती है।

(सही बुखारी, किताबुल बय्यूअ, बाब इज़ा बैय्यनल बैयियान वलम यक्तुमा व नासहा, अनुवादित, जिल्द 4, पृष्ठ 38–39, हदीस: 2079, प्रकाशक नज़ारत-ए-इशाअत)

बहुत से व्यापारिक झगड़े झूठी बातों की वजह से होते हैं, और अल्लाह तआला फिर ऐसे लोगों की बातों और उनके कारोबार में बरकत नहीं देता। दुनिया में तो वे जो नुकसान उठाना होता है उठाते हैं, और अल्लाह के यहाँ भी गुनहगार ठहरते हैं और सज़ा पाते हैं।

फिर हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जब कोई बंदा झूठ बोलता है तो फ़रिश्ता उस व्यक्ति से एक मील दूर हो जाता है, उस बदबू के कारण जो उसने झूठ के कारण पैदा की होती है।

(जामे तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़िस्सिद्क़ि वल-कज़िब, हदीस: 1972)

एक रिवायत में आता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक अनाज के ढेर के पास से गुज़रे। आपने अपना हाथ उसमें डाला तो आपकी उंगलियों को नमी महसूस हुई। आपने फ़रमाया: "ऐ अनाज वाले! यह क्या मामला है?" उसने कहा: या रसूलुल्लाह! इस पर बारिश हो गई थी। आपने फ़रमाया: "तो फिर तुमने उसे ऊपर क्यों न रखा ताकि लोग उसे देख सकते, बजाय इसके कि तुमने उसे छिपाकर नीचे रखा? अगर उस पर बारिश हुई थी तो उसे ऊपर रखते ताकि लोग देख सकते।"

आपने फ़रमाया: "जो धोखा देता है वह मुझ में से नहीं है।"

(सही मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब क़ौलिन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम: 'मन गश्शना फलैसा मिन्ना', अनुवादित, जिल्द 01, पृष्ठ 93, हदीस 139, प्रकाशक नूर फ़ाउंडेशन)

इसलिए व्यापार करने वाले लोगों को इतनी बारीकी से अपने काम को देखना चाहिए। यही वह मानक है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक मुसलमान में पैदा करना चाहते थे। लेकिन अफसोस कि आज मुसलमान ही धोखाधड़ी के व्यापार और झूठ की वजह से दुनिया में बदनाम हैं।

इसलिए आज हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर सच्चा ईमान लाने का दावा करते हैं, हमारे हर कथन और कर्म में सच्चाई का उच्च मानक होना चाहिए। वरना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर ऐसा नहीं है तो तुम मुझ में से नहीं हो, फिर मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं। आपने सच्चाई को अपनाने के लिए बार-बार बहुत गहरी नसीहतें और हिदायतें दी हैं। और कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान हो ही नहीं सकता जब तक वह पूरी तरह सच्चाई पर क़ायम न हो।

अब मैं आपकी सीरत के संबंध में कुछ बातें प्रस्तुत करता हूँ।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमेशा सच्च बोलने और अमानत व दियानत में सबसे श्रेष्ठ होने की वजह से लोगों में "सादिक" और "अमीन" के नाम से प्रसिद्ध थे।

एक लेखक ने लिखा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जाहिलियत के समय में भेजे गए। उनकी क़ौम में उनसे पहले कोई नबी नहीं आया था। लोग मूर्तियों और तागूत की पूजा करते थे। आपको बचपन ही में बुद्धि और समझ प्रदान की गई, जबकि आप मूर्ति-पूजकों और शैतानी गिरोह के बीच थे। आपने कभी किसी मूर्ति की ओर रुझान नहीं किया, न कभी उनके त्योहारों में भाग लिया। आपसे कभी झूठ नहीं सुना गया। लोग आपको "सदूक़" यानी बहुत अधिक सच्चा बोलने वाला, "अमीन", सहनशील और अत्यंत दयालु समझते थे।

(इमताअुल अस्माअ, जिल्द 4, पृष्ठ 212, मकतबा दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

बल्कि रिवायत में आता है कि इस्लाम से पहले भी जाहिलियत के समय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से फ़ैसले करवाए जाते थे।

(सुबुलुल हुदा वर-रशाद, जिल्द 2, पृष्ठ 147, मकतबा दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

इस बात को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर इस तरह बयान किया है:

"आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अच्छे अख़लाक़ के बारे में कुल मिलाकर गवाही वह है जो आपकी क़ौम ने दी कि आपकी नबूवत के दावे से पहले आपकी क़ौम ने आपका नाम 'अमीन' और 'सिद्दीक़' रखा। दुनिया में ऐसे बहुत लोग होते हैं जिनके बारे में बद-ईमानदारी का कोई प्रमाण नहीं मिलता। ऐसे लोग भी बहुत होते हैं जिन्हें किसी कठिन परीक्षा से गुजरने का अवसर नहीं मिलता। वे सामान्य परीक्षाओं से गुजरते हैं और उनकी अमानत बनी रहती है, लेकिन इसके बावजूद उनकी क़ौम उन्हें कोई विशेष नाम नहीं देती। क्योंकि विशेष नाम तब दिए जाते हैं जब कोई व्यक्ति किसी विशेष गुण में सभी लोगों पर श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है। युद्ध में भाग लेने वाला हर सैनिक अपनी जान खतरे में डालता है, लेकिन न तो अंग्रेज़ी क़ौम हर सैनिक को विक्टोरिया क्रॉस देती है और न ही जर्मन क़ौम हर सैनिक को आयरन क्रॉस देती है। फ्रांस में लाखों लोग विद्या में लगे होते हैं, लेकिन हर किसी को 'लीजन ऑफ़ ऑनर' का पदक नहीं मिलता। इसलिए केवल किसी व्यक्ति का अमानतदार और सच्चा होना उसकी महानता को विशेष रूप से उजागर नहीं करता, लेकिन किसी व्यक्ति को पूरी क़ौम का 'अमीन' और 'सिद्दीक़' कहना एक असाधारण बात है। और अरब इतिहास में केवल एक ही उदाहरण मिलता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह उपाधि दी गई। इसलिए यह इस बात का प्रमाण है कि आपकी अमानत और सच्चाई दोनों इतने उच्च स्तर की थीं कि उनकी मिसाल किसी और में नहीं मिलती थी।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 374–375)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आज दुनिया की हालत बहुत नाज़ुक हो गई है। जिस पहलू और रंग से देखो, झूठे गवाह बनाए जाते हैं। झूठे मुक़दमे करना तो बात ही क्या है। झूठे दस्तावेज़ बना लिए जाते हैं। काग़ज़ भी झूठे बना लिए जाते हैं। कोई बात बयान करेंगे तो सच का पहलू बचाकर बोलेंगे, और जिस बात से फ़ायदा होता हो उसमें सच छोड़ देंगे और झूठी बातें होंगी। अब कोई इन लोगों से जो इस सिलसिले की ज़रूरत नहीं समझते पूछे कि क्या यही वह दीन था" यानी आप फ़रमा रहे हैं कि जो जमात मैंने शुरू की है वह सच्चाई पर क़ायम रहने के लिए है "क्या यही वह दीन था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लेकर आए थे? अल्लाह तआला ने तो झूठ को गंदगी कहा है कि इससे बचो:

اِجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ (अल-हज: 31)

अल्लाह तआला ने झूठ को बुतपरस्ती के साथ मिलाया है, जैसे कोई बेवक़ूफ़ इंसान अल्लाह को छोड़कर पत्थर के आगे सिर झुकाता है। मतलब यह है कि जिस तरह बुतपरस्ती बड़ी गंदगी है, उसी तरह झूठ भी गंदगी है। इसलिए इससे बचो। बुतपरस्ती से बचने का आदेश है क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह है, और झूठ भी उसी के बराबर है। जैसे एक बुतपरस्त बुत से नजात चाहता है, वैसे ही झूठ बोलने वाला अपने आप एक बुत बना लेता है और समझता है कि इस बुत के ज़रिये नजात मिल जाएगी। अगर कहा जाए कि बुतपरस्ती क्यों करते हो, इस गंदगी को छोड़ दो, तो कहते हैं कि कैसे छोड़ दें, इसके बिना गुज़ारा नहीं हो सकता।"

आप फ़रमाते हैं:

"इससे बढ़कर और क्या बदनसीबी होगी कि लोग झूठ पर अपनी ज़िंदगी का आधार समझते हैं। लेकिन मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि आख़िर में सच्चाई ही कामयाब होती है, भलाई और फ़तह उसी की होती है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 181, संस्करण 2022)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत बयान करते हुए हज़रत

मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक स्थान पर लिखते हैं:

"रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी बीवी को सूचना देते हैं कि मुझ पर यूँ वह्य नाज़िल हुई है, तो बीवी यह नहीं कहती कि यह क्या दिखावा करने लगे हो, बल्कि वह कहती है: आप घबराएँ नहीं, आपने जो कुछ देखा है सही देखा है। अल्लाह तआला आपको नष्ट नहीं कर सकता क्योंकि आप रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करते हैं, कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं, खोई हुई अच्छाइयों को क़ायम करते हैं, मेहमानों की मेहमाननवाज़ी करते हैं और हक़ की मदद करते हैं।"

फिर वह उन्हें अपने भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले जाती है, जो यहूदी धर्मग्रंथों के विद्वान थे। वह सुनते ही कहते हैं कि यह वही वह्य है जो मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई थी, और इसमें वही आदेश और बातें हैं जो मूसा अलैहिस्सलाम की वह्य में थीं।

एक और गवाही यह दी जाती है: एक रिश्तेदार भाई जो युवा था, जब वह यह सुनता है कि एक बड़ा बदलाव होने वाला है, तो बड़ी संजीदगी से कहता है कि मैं भी मानता हूँ कि आप सच्चे हैं और अल्लाह तआला ने आपको दुनिया की इस्लाह के लिए नियुक्त किया है।

एक आज़ाद किया गया ग़ुलाम, जो आपके अख़लाक़ का दीवाना होकर अपने माँ-बाप को छोड़कर आपके दरवाज़े पर आ बैठा था, जब यह बातें सुनता है और अपने आका के चेहरे पर फ़िक्र और परेशानी के आसार देखता है, तो आगे बढ़कर दामन पकड़ लेता है और कहता है: "मेरे आका! वही होगा जो आपने देखा है। आप जैसे इंसान के साथ अल्लाह धोखा नहीं कर सकता। आप पूरी तरह सच्चे हैं।"

फिर एक और गवाही एक गहरे दोस्त की है। जब वह सुनता है कि उसका दोस्त ऐसी बातें कर रहा है, तो दौड़ता हुआ आता है और दरवाज़ा खुलवाकर पूछता है कि क्या यह सच है। जब आप उसे समझाने लगते हैं, तो वह कहता है: "ख़ुदा की क़सम! मुझे दलीलें न दें, सिर्फ़ यह बताइए कि क्या यह सच है।" और फिर आपके सच्चे होने की गवाही देकर कहता है कि मैं आप पर ईमान लाया। फिर वह कहता है: "मेरे दोस्त, जिसने तुम्हारा चेहरा देखा हो, वह तुम्हारी बात में कैसे शक कर सकता है।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 13, पृष्ठ 201–202, संस्करण 2023)

फिर आगे हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वरक़ा बिन नौफ़ल ने कहा: "हर वह व्यक्ति जो ऐसा संदेश लेकर आता है, उसका विरोध किया जाता है।" लेकिन अल्लाह तआला ने विरोध से पहले ही आपके साथी पैदा कर दिए: हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे लोग, जिन्होंने आपकी सच्चाई की गवाही दी और आपकी मदद में जान तक लगा दी।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं:

"सच्चे और रास्तबाज़ की सच्चाई का सबसे बड़ा सबूत उसका अपना व्यक्तित्व होता है, जो पुकार-पुकार कर कहता है कि मुझे देखो और मुझे झूठा कहने से पहले सोचो। पूरी ज़िंदगी का इतिहास गवाही देता है कि कोई व्यक्ति अचानक पूरी तरह बदल नहीं सकता। अगर सारी ज़िंदगी सच्चाई और अमानत के साथ गुज़री हो तो एक दिन में झूठा नहीं बन सकता। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पूरे जीवन को सामने रखकर कहा कि क्या कोई है जो कह सके कि मैंने कभी झूठ बोला, धोखा दिया, किसी का हक़ मारा या अन्याय किया? तुमने मुझे हर स्थिति में आज़माया, और हमेशा मुझे सच्चा पाया।"

आप फ़रमाते हैं कि यह संभव नहीं कि पूरी ज़िंदगी सच्चाई में गुज़रे और अचानक एक दिन में व्यक्ति झूठा घोषित हो जाए। अगर जीवन साफ़ और पाक हो तो फिर दलीलों की ज़रूरत नहीं रहती, क्योंकि सबसे बड़ी दलील स्वयं इंसान का चरित्र होता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 13, पृष्ठ 201–202, संस्करण 2023)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उस्वा बयान करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"सादिक़ और रास्तबाज़ की सच्चाई के प्रमाणों में से एक बहुत बड़ा प्रमाण उसका अपना व्यक्तित्व होता है, जो पुकार-पुकार कर कहता हैविरोधियों और समर्थकों को संबोधित करके, अनजान और जानकारों से, अजनबियों और भरोसेमंद साथियों से कहता है कि मुझे देखो और मुझे झूठा कहने से पहले सोचो कि क्या तुम मुझे झूठा कह सकते हो? क्या मुझे झूठा कहकर तुम्हारे हाथ से वे सारे साधन नहीं निकल जाएंगे जिनसे तुम किसी चीज़ की सच्चाई तक पहुँचते हो? और क्या मुझे झूठा ठहराकर तुम पर वे सारे दरवाज़े बंद नहीं हो जाएंगे जिनमें से होकर तुम सच्चाई के गवाह तक पहुँचते हो? दुनिया की हर चीज़ निरंतरता चाहती है और हर चीज़ के दर्जे होते हैं। न भलाई अपने बीच के चरण छोड़े बिना अपने पूर्णता तक पहुँच सकती है और न बुराई अपने मध्य स्तरों को छोड़े बिना अपनी चरम सीमा तक पहुँच सकती है। फिर यह कैसे संभव है कि पश्चिम की ओर दौड़ने वाला अचानक अपने आपको पूरब के अंतिम किनारे पर पाए? यह तो नहीं हो सकता कि दौड़ किसी दिशा में हो और पहुँच किसी और दिशा में हो, और दक्षिण की ओर जाने वाला उत्तर के क्षितिज पर खड़ा हो जाए।"

आप फ़रमाते हैं:

"मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी तुम्हारे बीच गुज़ारी है।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों से फ़रमाया: "मैं छोटा था और तुम्हारे हाथों में पला-बढ़ा। मैं युवा था और तुम्हारे बीच बड़ा हुआ। मेरी निजी और सार्वजनिक ज़िंदगी के जानकार तुममें मौजूद हैं। मेरा कोई काम तुमसे छिपा नहीं और न कोई बात तुमसे गुप्त है। फिर तुममें कौन है जो यह कह सके कि मैंने कभी झूठ बोला है, या ज़ुल्म किया है, या धोखा दिया है, या किसी का हक़ मारा है, या अपनी बड़ाई चाही है, या सत्ता पाने की कोशिश की है? तुमने मुझे हर मैदान में आज़माया और हर हालत में परखा, मगर हमेशा मुझे संतुलन और मध्य मार्ग पर चलते देखा, और हर प्रकार की खोट से मुझे पाक पाया, यहाँ तक कि दोस्त और दुश्मन दोनों से मुझे 'अमीन' और 'सादिक़' का खिताब मिला।"

फिर आप फ़रमाते हैं:

"फिर यह क्या बात है कि कल शाम तक मैं अमीन था, सादिक़ था, रास्तबाज़ था, झूठ से कोसों दूर था, सच्चाई पर फ़िदा थाबल्कि सच्चाई मुझ पर फ़ख़्र करती थी। हर बात और हर मामले में तुम मुझ पर भरोसा करते थे और मेरी हर बात को स्वीकार करते थे। मगर आज एक दिन में ऐसा परिवर्तन हो गया कि मैं सबसे बुरा और सबसे गंदा बन गयासिर्फ़ इस एक दावे से कि या तो मैंने कभी इंसानों पर झूठ नहीं बोला था या अब मैं अल्लाह पर झूठ बोलने लगा हूँ। क्या ऐसी परिवर्तनशीलता की कोई मिसाल क़ानून-ए-क़ुदरत में मिलती है?"

आप फ़रमाते हैं कि अगर एक-दो दिन की बात होती तो तुम कहते कि बनावट है, साल-दो साल की बात होती तो कहते कि धोखा देने के लिए किया गया है, मगर मैं तो पूरी ज़िंदगी तुम्हारे बीच रहा हूँ। बचपन तुमने देखा, जवानी तुमने देखी, और बुढ़ापा भी तुम्हारी आँखों के सामने गुज़रा। फिर यह बनावट कैसे संभव थी? बचपन में जब इंसान को अपने भले-बुरे की भी समझ नहीं होती, तब यह दिखावा कैसे संभव था? जवानी, जो दीवानगी की उम्र कहलाती है, उसमें मैंने धोखे से अपनी हालत कैसे छिपाई? सोचो कि यह धोखा कब हुआ और किसने किया?

और यदि तुम विचार करो तो मेरी ज़िंदगी को न केवल दोषों से पाक पाओगे बल्कि उसे भलाई का प्रतीक और सच्चाई की प्रतिमा देखोगे। फिर सूरज को देखकर रात का ऐलान मत करो। जब दिन उजाला हो तो यह मत कहो कि रात है। मेरी बातें दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हैं, और रोशनी की मौजूदगी में अंधेरे की शिकायत मत करो। तुम्हें मेरे व्यक्तित्व के सिवा और किस प्रमाण की ज़रूरत है? मेरा व्यक्तित्व ही सबसे बड़ा प्रमाण है, और मेरे पिछले आचरण को छोड़कर और किस दलील की आवश्यकता है? मेरा पूरा अतीत तुम्हारे सामने है, फिर भी तुम कहते हो कि कोई प्रमाण पेश करो।"

"मेरा व्यक्तित्व स्वयं मेरे ऊपर गवाह है और मेरी ज़िंदगी मेरे पक्ष में गवाही देती है। अगर तुममें से हर व्यक्ति अपने अंदर झाँककर देखे तो उसका दिल और दिमाग भी यही गवाही देगा कि सच्चाई मुझमें स्थापित है और मैं सच्चाई पर स्थापित हूँ। सच्चाई मुझ पर गर्व करती है और मैं सच्चाई पर गर्व करता हूँ। मुझे अपनी सच्चाई साबित करने के लिए किसी और चीज़ की आवश्यकता नहीं। मेरी मिसाल सूरज के आने से सूरज के होने की दलील जैसी है।"

अर्थात सूरज का निकलना ही सूरज के अस्तित्व की दलील है।

"यही वह सबसे बड़ी दलील है जिसने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में घर कर लिया, और यही वह मज़बूत प्रमाण है जो हमेशा सच्चाई पसंद लोगों के दिलों में जगह बनाता रहेगा।"

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दावा किया, उस समय हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने एक मित्र के घर पर थे। वहीं उनकी एक आज़ाद लौंडी ने सूचना दी कि उनके मित्र की पत्नी कहती है कि उसका पति उस प्रकार का नबी बन गया है जैसा मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में बताया जाता है। यह सुनकर आप तुरंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर पहुँचे और पूछा। आपने फ़रमाया: "मैं अल्लाह का रसूल हूँ।"

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुनते ही आपके दावे को स्वीकार कर लिया। स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी उनके बारे में फ़रमाते हैं कि मैंने किसी को इस्लाम की ओर बुलाया तो उसने कुछ झिझक और विचार किया, लेकिन अबू बकर के सामने जब इस्लाम पेश किया गया तो उन्होंने बिना किसी झिझक के उसे स्वीकार कर लिया।

यह क्या चीज़ थी जिसने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को बिना किसी बाहरी संकेत के ईमान लाने पर मजबूर कर दिया? यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वह व्यक्तित्व था जो स्वयं अपनी सच्चाई की गवाही देता है।

इसी प्रकार हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में भी गवाहियाँ पहले प्रस्तुत की जा चुकी हैं, जिन्होंने आपकी सच्चाई देखकर आपके दावे की पुष्टि की।

संक्षेप में, नबी की सच्चाई का पहला आंतरिक प्रमाण उसका अपना व्यक्तित्व होता है, जो अपनी सच्चाई पर स्वयं गवाही देता है। और यह गवाही इतनी मज़बूत होती है कि इसके सामने किसी और चमत्कार या निशानी की आवश्यकता ही नहीं रहती।

(दअवतुल अमीर, अनवारुल उलूम, जिल्द 07, पृष्ठ 425–428)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अल्लाह के कलाम से पता चलता है कि मुत्तक़ी वे होते हैं जो विनम्रता और सादगी से चलते हैं। वे घमंडी बात नहीं करते। उनकी बातचीत ऐसी होती है जैसे छोटा बड़े से बात कर रहा हो। हमें हर हाल में वही करना चाहिए जिससे हमारी भलाई हो। अल्लाह तआला किसी का ठेकेदार नहीं, वह केवल सच्चे तक़वा को चाहता है। जो तक़वा अपनाएगा वह उच्च स्थान प्राप्त करेगा।"

आप फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को कोई विरासत से सम्मान नहीं मिला, बल्कि यह अल्लाह का फ़ज़ल था जो उनकी फ़ितरत के सच्चे गुणों के कारण दिया गया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने सच्चे ईमान और तक़वा के कारण बेटे को कुर्बान करने से भी संकोच नहीं किया और आग में डाले जाने को भी स्वीकार किया।

आप फ़रमाते हैं:

"हमारे सैय्यद व मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई और वफ़ा देखिए! आपने हर प्रकार की बुराई और विरोध का सामना किया, तरह-तरह की तकलीफ़ें उठाईं लेकिन परवाह नहीं की। यही सच्चाई और वफ़ा थी जिसके कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया।"

इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अल-अहज़ाब: 57)

इस आयत से स्पष्ट होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कर्म इतने उच्च थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा के लिए कोई सीमित शब्द निर्धारित नहीं किए। आपके कर्म वर्णन की सीमा से परे थे। ऐसी आयत किसी और नबी के बारे में नहीं आई।

आपकी रूह में ऐसा सच्च और पवित्रता थी और आपके कर्म अल्लाह की दृष्टि में इतने प्रिय थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह आदेश दिया कि मोमिन आपके ऊपर दुरूद भेजते रहें।

यदि हम इतिहास देखें तो इतनी ऊँची मिसाल किसी और में नहीं मिलती। हज़रत मसीह के समय को भी देखें तो उनके अनुयायियों की स्थिति उतनी उच्च नहीं रही। एक बुरी आदत को सुधारना अत्यंत कठिन होता है, और जमी हुई आदतें बदलना लगभग असंभव होता है।

लेकिन हमारे पवित्र नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों को सुधार दिया जो मानवता से भी नीचे थे। कुछ लोग पशुओं से भी बदतर थे, कोई मूर्तिपूजक था, कोई नास्तिक, कोई तत्वों का पूजक। पूरा अरब विभिन्न धर्मों का मिश्रण था।

इसका बड़ा लाभ यह हुआ कि क़ुरआन में हर प्रकार की शिक्षाएँ मौजूद हैं, और दुनिया की हर बुराई को समाप्त करने के लिए उसमें पूर्ण मार्गदर्शन है। यह अल्लाह तआला की गहरी हिकमत है।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 31–33, संस्करण 2022)

अंत में दुरूद:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाह तआला हमें भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उस्वा-ए-हसन पर चलते हुए, क़ुरआन करीम और आपके आदेशों पर अमल करने और सच्चाई के मानकों को और ऊँचा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

सकता था कि यह महान व्यक्ति दुनिया में इतना बड़ा स्थान पाएगा और अपने विरोधियों की सारी साज़िशों से सुरक्षित निकलकर सफलता प्राप्त करेगा?

लेकिन याद रखो कि खुदा तआला की यही आदत है कि अंत में जीत हमेशा खुदा के बंदों की ही होती है। हत्या की साज़िशें, कुफ़्र के फ़तवे और तरह-तरह की तकलीफ़ें उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकतीं।

खुदा तआला ने सच कहा है:

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ (الصف:9)

"ये शरारती काफ़िर अपने मुँह की फूँकों से खुदा के नूर को बुझाना चाहते हैं, लेकिन खुदा अपने नूर को पूरा करने वाला है, चाहे काफ़िरों को यह कितना ही बुरा लगे।"

मुँह की फूँकें क्या होती हैं? यही कि किसी ने ठग कह दिया, किसी ने व्यापारी और काफ़िर या बेदीन कह दिया। यह लोग ऐसी बातों से खुदा के नूर को बुझाना चाहते हैं, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते। वे खुद नूर-ए-इलाही को बुझाने की कोशिश में जलकर अपमानित हो जाते हैं।

खुदा तआला के बंदों के लश्कर आसमान में होते हैं। इनकार करने वाले और ज़मीन पर रहने वाले लोग उन्हें देख नहीं सकते। अगर वे उन्हें जान लें और थोड़ा भी देख सकें तो डर के मारे समाप्त हो जाएँ, लेकिन यह लश्कर दिखाई नहीं देते जब तक मनुष्य खुदा तआला की शरण में न आ जाए।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 68–69, संस्करण 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

दे दे, तब भी वह जो कुछ देगा वह केवल उनकी मज़दूरी ही होगी। जबकि क़ुरआनी शिक्षा के अनुसार वे लोग भी उस खदान में हिस्सेदार थे। इसलिए मज़दूरी देने के बाद भी जो उनका वास्तविक अधिकार था, वह अदा नहीं होता।

उसकी अदायगी की एक शक्ल यह हो सकती थी कि उन मज़दूरों को कुछ अतिरिक्त राशि दे दी जाती, लेकिन इस तरह केवल उन्हीं कुछ मज़दूरों का हक़ अदा होता जो वहाँ काम कर रहे हैं, जबकि बाकी दुनिया जो उसी तरह उसमें हिस्सेदार थी, अपने अधिकार से वंचित रह जाती।

इसलिए इस्लाम ने यह आदेश दिया कि हर व्यक्ति अपने माल का एक हिस्सा ज़कात के रूप में अवश्य दे, ताकि सरकार उसे पूरी मानवजाति की ज़रूरतों के लिए साझा रूप से खर्च करे।

इसी तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हर खदान जो प्राप्त की जाए, उसका पाँचवाँ हिस्सा (1/5) सरकार को मिलेगा ताकि उसे गरीबों पर खर्च किया जाए। इस तरह भी इस्लाम ने पूरी मानवजाति का जमीन में जो हिस्सा है उसे सुरक्षित कर दिया है।

इसी तरह एक ज़मींदार जो ज़मीन से अपनी रोज़ी पैदा करता है, भले ही वह अपनी मेहनत का फल खाता है, लेकिन वास्तव में वह उस ज़मीन से लाभ उठाता है जो पूरी मानवजाति के लिए साझा रूप से बनाई गई थी। इसलिए उसकी आमदनी में से भी एक हिस्सा अनिवार्य रूप से सरकार को दिलवाया जाता है, ताकि उसे पूरी मानवजाति के लाभ के लिए खर्च किया जाए।

यही स्थिति व्यापार की भी है। व्यापार करने वाला व्यक्ति बज़ाहिर अपने धन से व्यापार करता है, लेकिन उसका व्यापार कभी भी देश की शांति के बिना नहीं चल सकता, और शांति की स्थापना में देश का हर व्यक्ति हिस्सेदार होता है। इसलिए उसके अधिकार को दिलाने के लिए व्यापारिक माल पर भी इस्लाम ने ज़कात निर्धारित कर दी, ताकि उन मालों में जो दूसरों के अधिकार शामिल हैं वे अदा हो जाएँ, और सरकार ऐसे सभी धन को मानवजाति से संबंधित साझा कार्यों की पूर्ति और उनके संचालन में खर्च करे।

(तफसीर कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 127 से 128, प्रकाशित क़ादियान 2010)

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमदरज़ि. जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

एक महान भविष्यवाणी का पूर्ण होना

जब युद्ध आरम्भ होने का समय आया तो नबी करीम (स.अ.व.) जहां बैठ कर दुआ कर रहे थे बाहर आए और फ़रमाया سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ अर्थात् शत्रु-सेना पराजित हो जाएगी और पीठ दिखा कर रणभूमि छोड़ जाएगी। आपस. के ये कथित शब्द क़ुर्आन करीम की एक भविष्यवाणी थी जो इस युद्ध के संबंध में क़ुर्आन करीम में मक्का में ही उतरी थी। मक्का में जब मुसलमान काफ़िरों के निरन्तर अत्याचारों का शिकार हो रहे थे तथा इधर-उधर हिजरत करके जा रहे थे। ख़ुदा तआला ने रसूले करीम (स.अ.व.) पर क़ुर्आन करीम की ये आयतें उतारीं

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ۝ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝

(सूरह क़मर 42 से 49)

अर्थात् हे मक्का वालो ! फिरऔन की ओर से भयभीत करने वाली बातें आई थीं, परन्तु उन्होंने हमारी समस्त आयतों का इन्कार किया। अतः हम ने उन्हें इस प्रकार पकड़ लिया जिस प्रकार एक सशक्त विजेता पकड़ता है (हे मक्का वालो) बताओ क्या तुम्हारे काफ़िर उन (काफ़िरों) से अच्छे हैं अथवा तुम्हारे लिए पहली पुस्तकों में सुरक्षा का कोई वचन दिया जा चुका है। वे कहते हैं हम तो एक महान शक्ति हैं जो शत्रुओं से पराजित नहीं होती अपितु शत्रुओं से प्रतिशोध लिया करती है (वे ये बातें करते रहें) उनके जत्थे शीघ्र ही एकत्र होंगे और फिर उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ेगा और वे पीठ फेर कर भाग जाएंगे अपितु ख़ुदा तआला की ओर से विनाश का वादा है और यह विनाश का समय अत्यन्त दारुण, दुखदायी और असहनीय होगा। उस दिन अपराधी अत्यन्त व्याकुल तथा प्रकोपग्रस्त होंगे और उन्हें मुँह के बल घसीट कर अग्नि-कुण्डों में डाल दिया जाएगा और कहा जाएगा कि अब महा प्रकोप का स्वाद चखो।

ये आयतें सूरह क़मर की हैं और सूरह 'क़मर' समस्त इस्लामी ऐतिहासिक वार्ताओं के अनुसार मक्का में उतरी थी। मुसलमान विद्वान भी इस सूरह को नुबुव्वत के दावे के पाँच से दस वर्ष पश्चात् की बताते हैं अर्थात् यह हिजरत से कम से कम तीन वर्ष पूर्व उतरी थी अपितु कदाचित आठ वर्ष पूर्व। यूरोप के शोधकर्ता भी इस की पुष्टि करते हैं। अतः नाल्डके (NOLDEKE) इस सूरह को नुबुव्वत के दावे के पांच वर्ष पश्चात् बताता है, रेवरण्ड वैरी (REVEREND WHERRY) लिखते हैं कि मेरे विचारानुसार नाल्डके (NOLDEKE) ने इस सूरह के उतरने का समय थोड़ा पहले बताया है। यह अपना अनुमान यह बताते हैं कि यह सूरह हिजरत से छः सात वर्ष पहले उतरी, जिसका तात्पर्य यह है कि उनके निकट यह सूरह नुबुव्वत के दावे के पश्चात् छठे या सातवें वर्ष की है। अस्तु मुसलमानों के शत्रुओं ने भी इस सूरह को हिजरत से कई वर्ष पूर्व का बताया है। उस ज़माने में इस युद्ध की सूचना कितने स्पष्ट शब्दों में दी गई थी तथा काफ़िरों का परिणाम बता दिया गया था और फिर किस प्रकार रसूले करीम (स.अ.व.) ने बदर का युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व इन आयतों को पढ़कर मुसलमानों को बताया कि ख़ुदा का वादा पूर्ण होने का समय आ गया है।

अतः चूंकि वह समय आ गया था जिसकी सूचना यसइयाह नबी① ने समय से पूर्व दे रखी थी तथा जिसकी सूचना क़ुर्आन करीम ने पुनः युद्ध प्रारम्भ होने से छः या आठ वर्ष पूर्व दी थी। इसलिए इसके बावजूद कि मुसलमान इस युद्ध के लिए तैयार न थे तथा इसके बावजूद कि काफ़िरों को भी उनके कुछ साथियों ने यह परामर्श दिया था कि युद्ध नहीं करना चाहिए। युद्ध हो गया तथा 313 लोग जिन में अधिकांश को युद्ध कला का अनुभव भी न था, शेष सब के सब साधनहीन और निहत्थे थे। काफ़िरों की अनुभवी सेना के मुक़ाबले में जिस की संख्या एक हज़ार से अधिक थी खड़े हो गए। युद्ध हुआ और कुछ ही घंटे के अन्दर अरब के बड़े-बड़े सरदार मारे गए। यसइयाह की भविष्यवाणी के अनुसार क़ैदार की गरिमा धूल में मिल गई तथा मक्का की सेना कुछ लाशें और कुछ क़ैदी पीछे छोड़ कर सर पर पांव रख कर मक्का की ओर भाग खड़ी हुई। जो क़ैदी पकड़े गए उनमें रसूले करीम (स.अ.व.) के चाचा अब्बासरज़ि. भी थे जो हमेशा आप का साथ दिया करते थे। मक्का वाले उन्हें विवश करके अपने साथ युद्ध के लिए ले आए थे। इसी प्रकार क़ैदियों में रसूले करीम (स.अ.व.) की बड़ी बेटी के पति अबुलआस भी थे। मारे जाने वालों में इस्लाम का सब से बड़ा शत्रु मक्का की सेना का सेनापति अबूजहल भी शामिल था①।

बदर के क़ैदी

इस विजय पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रसन्न थे कि वे भविष्यवाणयां कि जिनका निरन्तर चौदह वर्ष से आप के द्वारा प्रचार किया जा रहा था तथा वे भविष्यवाणयां जो पूर्वकालीन नबी उस दिन के संबंध में कर चुके थे पूरी हो गईं परन्तु मक्का के विरोधियों का भयानक अन्त भी आपकी दृष्टि के सामने था। आप के स्थान पर यदि कोई अन्य व्यक्ति होता तो प्रसन्नता से उछलता और कूदता, परन्तु जब मक्का के क़ैदी रस्सियों में बंधे हुए आप के सामने से गुज़रे तो आप और आप के वफ़ादार साथी अबू बकररज़ि. की आँखों से सहसा आँसू बहने लगे। उस समय हज़रत उमररज़ि. जो बाद में आप के द्वितीय ख़लीफ़ा बने सामने से आए तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस विजय और हर्षोल्लास के अवसर पर आप क्यों रो रहे हैं ! उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मुझे भी बताइए कि इस समय रोने का क्या कारण है यदि वह बात मेरे लिए भी रोने का कारण है तो मैं भी रोऊँगा, अन्यथा कम से कम आप के साथ भागीदार होने के लिए रोने वाली शक्ल ही बनाऊँगा। आपस. ने फ़रमाया देखते नहीं कि ख़ुदा तआला के आदेशों की अवहेलना करने से आज मक्का वालों की क्या दशा हो रही है।

आप के न्याय और अदालत का उल्लेख यसइयाह नबी ने अपनी भविष्यवाणीयों में बार-बार किया है। इस अवसर पर एक रहस्यपूर्ण प्रमाण प्राप्त हुआ। मदीना की ओर वापस आते हुए रात को जब आप सोने के लिए लेटे तो सहाबारज़ि. ने देखा कि आप को नींद नहीं आ रही। अतः उन्होंने विचार करके यह परिणाम निकाला कि आप के चाचा अब्बासरज़ि. चूंकि रस्सियों में जकड़े होने के कारण सो नहीं सकते और उनके कराहने की आवाज़ें आती हैं इसलिए उनके कष्ट के विचार से आप को नींद नहीं आती। उन्होंने आपस में परामर्श करके हज़रत अब्बासरज़ि. के बन्धनों को ढीला कर दिया। हज़रत अब्बासरज़ि. सो गए और रसूले करीम (स.अ.व.) को भी नींद आ गई। थोड़ी देर के पश्चात सहसा घबरा कर आप की आँख खुली और आपस. ने पूछा अब्बासरज़ि. ख़ामोश क्यों हैं, उनके कराहने की आवाज़ क्यों नहीं आती? आप के हृदय में यह भ्रम उत्पन्न हुआ कि कदाचित कष्ट के कारण वह बेहोश हो गए। सहाबारज़ि. ने कहा हे अल्लाह के

रसूल ! हमने आप के कष्ट को देखकर उनके बन्धन ढीले कर दिए हैं। आप[स.] ने फ़रमाया नहीं, नहीं यह अन्याय नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार अब्बास मेरे सम्बन्धी हैं अन्य क़ैदी भी दूसरों के परिजन हैं या तो सब क़ैदियों के बंधन ढीले कर दो ताकि वे आराम से सो जाएं और या फिर अब्बास[रज़ि.] के भी बन्धन कस दो। सहाबा[रज़ि.] ने आप[स.] की बात सुनकर सब क़ैदियों के बंधन ढीले कर दिए तथा सुरक्षा का पूर्ण दायित्व अपने ऊपर ले लिया। जो लोग क़ैद हुए थे उनमें से जो पढ़ना जानते थे आप[स.] ने उनका केवल यही फ़िदया निर्धारित किया कि वे मदीना के दस-दस लड़कों को पढ़ना सिखा दें अर्थात् जिनको मुक्त कराने हेतु धन राशि देने वाला कोई नहीं था उन्हें यों ही आज़ाद कर दिया, वे धनवान लोग जो फ़िदया दे सकते थे उन से उचित फ़िदया लेकर छोड़ दिया और इस प्रकार इस प्राचीन दासप्रथा को कि क़ैदियों को दास बना कर रखा जाता था समाप्त कर दिया।

उहद का युद्ध

काफ़िरों की सेना ने बदर की रणभूमि से भागते हुए यह घोषणा की थी कि अगले वर्ष हम पुनः मदीना पर आक्रमण करेंगे तथा मुसलमानों से अपनी पराजय का बदला लेंगे। अतः एक वर्ष के पश्चात् वे पुनः पूरी तैयारी करके मदीना पर आक्रमणकारी हुए। मक्का वालों की यह दशा थी कि उन्होंने बदर के युद्ध के पश्चात् यह घोषणा कर दी थी कि किसी व्यक्ति को अपने पुरुषों पर रोने की आज्ञा नहीं तथा जो व्यापारिक काफ़िले आएंगे उनकी आय भावी युद्ध के लिए सुरक्षित रखी जाएगी। अतः बड़ी तैयारी के पश्चात् तीन हज़ार से अधिक सैनिकों के साथ अबू सुफ़यान मदीना पर आक्रमणकारी हुआ। रसूले करीम (स.अ.व.) ने सहबा[रज़ि.] से परामर्श किया कि क्या हमें शहर में ठहर कर मुक़ाबला करना चाहिए या बाहर निकलकर? आप का अपना विचार यही था कि शत्रु को आक्रमण करने दिया जाए ताकि युद्ध के आरम्भ करने का वही उत्तरदायी हो और मुसलमान अपने घरों में बैठ कर आसानी से सामना कर सकें, परन्तु वे मुसलमान युवक जिन्हें बदर के युद्ध में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था और जिनके हृदयों में एक पीड़ा थी कि काश ! हमें भी ख़ुदा के मार्ग में शहीद होने का अवसर प्राप्त होता। उन्होंने आग्रह किया कि हमें शहीद होने से क्यों वंचित किया जाता है। अतः आप[स.] ने उनकी बात स्वीकार कर ली।

परामर्श करते समय आप ने एक स्वप्न भी सुनाया। फ़रमाया स्वप्न में मैंने कुछ गाएं देखी हैं तथा मैंने देखा कि मेरी तलवार का सिरा टूट गया है और मैंने यह भी देखा कि वे गाएं ज़िब्ह की जा रही हैं और फिर यह कि मैंने अपना हाथ एक मज़बूत और सुरक्षित कवच के अन्दर डाला है[1] और मैंने यह भी देखा कि मैं एक मेंढे की पीठ पर सवार हूँ[2]। सहाबा[रज़ि.] ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप ने इन स्वप्नों की क्या ता'बीर की? आपने फ़रमाया गाय के ज़िब्ह करने की ता'बीर यह है कि मेरे कुछ सहाबा[रज़ि.] शहीद होंगे और तलवार का सिरा टूटने से अभिप्राय यह मालूम होता है कि मेरे प्रियजनों में से कोई प्रमुख व्यक्ति शहीद होगा अथवा कदाचित मुझे ही इस युद्ध में कोई कष्ट पहुँचे तथा कवच के अन्दर हाथ डालने का अभिप्राय मैं यह समझता हूँ कि हमारा मदीना में ठहरना अधिक उचित है और मेंढे पर सवार होने वाले स्वप्न की ता'बीर से यह प्रतीत होता है कि काफ़िरों के सरदार पर हम विजयी होंगे अर्थात् वह मुसलमानों के हाथ से मारा जाएगा। यद्यपि इस स्वप्न में मुसलमानों पर यह स्पष्ट कर दिया गया था कि उनका मदीना में रहना अधिक उचित है परन्तु चूंकि स्वप्न की ता'बीर रसूले करीम (स.अ.व.) की अपनी थी, इल्हामी नहीं थी, आपने बहुमत को स्वीकार कर लिया और यूद्ध के लिए बाहर जाने का निर्णय कर दिया। जब आप बाहर निकले तो युवकों के अपने हृदय में लज्जा का आभास हुआ। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जो आप का परामर्श है वही उचित है, हमें मदीना में ठहर कर शत्रु का सामना करना चाहिए। आप[स.] ने फ़रमाया ख़ुदा का नबी जब कवच धारण कर लेता है तो उतारा नहीं करता। अब चाहे कुछ भी हो हम आगे ही जाएंगे। यदि तुम ने धैर्य से काम लिया तो ख़ुदा की सहायता तुम्हारे साथ होगी। यह कह कर आप[स.] एक हज़ार सेना के साथ मदीना से निकले और थोड़ी दूर जाकर रात व्यतीत करने के लिए डेरा डाल दिया। आप का सदैव यह नियम था कि आप शत्रु के पास पहुँच कर अपनी सेना को कुछ समय विश्राम करने का अवसर दिया करते थे, ताकि वे अपने सामान आदि तैयार कर लें। प्रातःकाल की नमाज़ के समय जब आप निकले तो आप को ज्ञात हुआ कि कुछ यहूदी भी अपने समझौता किए हुए क़बीलों की सहायता के बहाने आए हैं। चूंकि यहूदियों के षड्यंत्रों की जानकारी आप को हो चुकी थी। आप ने फ़रमाया इन लोगों को वापस कर दिया जाए। इस पर अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल जो मुनाफ़िक़ों (द्वैमुखी लोगों) का सरदार था वह भी अपने तीन सौ साथियों को लेकर यह कहते हुए वापस लौट गया कि अब यह लड़ाई नहीं रही, यह तो विनाश को निमंत्रण देना है; क्योंकि स्वयं अपने सहायकों को युद्ध से रोका जाता है। परिणामस्वरूप मुसलमान मात्र सात सौ रह गए जो शत्रु सेना की संख्या के चौथाई भाग से भी कम थे और युद्ध सामग्री की दृष्टि से और भी निर्बल; क्योंकि शत्रु सेना में सात सौ कवचधारी थे और मुसलमानों में मात्र एक सौ कवचधारी। शत्रु सेना में दो सौ घुड़सवार थे परन्तु मासलमानों के पास केवल दो घोड़े थे। अस्तु आप 'उहद' के स्थान पर पहुँचे। वहाँ पहुँच कर आपने एक दर्रे की सुरक्षा के लिए पचास सैनिक नियुक्त किए और सैनिकों के अफ़सर को निर्देश दिया कि दर्रा इतना महत्वपूर्ण है कि चाहे हम मौत के घाट उतार दिए जाएँ या विजयी हो जाएँ तुम यहाँ से न हटना[1]। तत्पश्चात् आप शेष छः सौ पचास सैनिक लेकर शत्रु का सामना करने के लिए निकले, जो अब शत्रु की संख्या से लगभग पांचवां भाग थे। युद्ध हुआ तथा अल्लाह तआला की सहायता और सहयोग से थोड़ी ही देर में साढ़े छः सौ मुसलमानों के मुकाबले में मक्का का तीन हज़ार अनुभवी सैनिक दल सर पर पैर रख कर भागा।

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम (स.अ.व.) का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा रसूले करीम (स.अ.व.) ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ज़ोर देने के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप का अभिप्राय यह तो नहीं हो सकता था कि शत्रु भाग भी जाए तो भी यहां खड़े रहो। यह कहते हुए उन्होंने दर्रा छोड़ दिया और रणभूमि में कूद पड़े। भागती हुई सेना में से ख़ालिद बिन वलीद जो बाद में इस्लाम के महान सेनापति सिद्ध हुए की दृष्टि ख़ाली दर्रे पर पड़ी जहां केवल कुछ सैनिक अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद ने अपनी (काफ़िरों की) सेना के अन्य सेनापति उमर बिन अलआस को आवाज़ दी और कहा कि पीछे पहाड़ी दर्रे पर तनिक दृष्टि डालो। उमर बिन अलआस ने जब दर्रे पर दृष्टि डाली तो समझा कि मुझे जीवन का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। दोनों सेनापतियों ने अपनी भागती हुई सेना को संभाला और इस्लामी सेना को भारी क्षति पहुँचाते हुए पर्वत पर चढ़ गए, वहां दर्रे की सुरक्षा के लिए थोड़े से मुसलमान खड़े रह गए थे, उनको टुकड़े-टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी सेना पर टूट पड़े। उनके विजय-नाद को

सुनकर शत्रु की भागती सेना रणभूमि की ओर लौट पड़ी। यह आक्रमण ऐसा अचानक हुआ तथा काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने बिखर गए कि उन लोगों के मुक़ाबले में कोई समुचित इस्लामी सेना नहीं थी। रणभूमि में अकेला-अकेला सैनिक दिखाई दे रहा था, जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया, शेष इस असमंजस में थे कि यह हो क्या गया है पीछे की ओर दौड़े। कुछ सहाबा दौड़ कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर एकत्र हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी①। काफ़िरों ने उस स्थान पर भयंकर आक्रमण किया जहां रसूले करीम (स.अ.व.) खड़े थे। सहाबा एक के बाद एक आपस. की रक्षा करते हुए मारे जाने लगे। कृपाणधारियों के अतिरिक्त धनुषधारी ऊँचे टीलों पर खड़े होकर रसूले करीम (स.अ.व.) की ओर अंधाधुंध वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय तल्हारज़ि. ने जो क़ुरैश में से थे तथा मक्का के मुहाजिरों में से थे, यह देखते हुए कि शत्रु सब के सब तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की ओर फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के मुख के आगे खड़ा कर दिया। वाण-वर्षा में जो तीर लक्ष्य पर गिरता था वह 'तल्हारज़ि.' के हाथ पर गिरता था, परन्तु प्राणों की बाज़ी लगाने वाला वफ़ादार सिपाही अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हारज़ि. का हाथ घावों से छलनी हो कर बिल्कुल बेकार हो गया और उनका एक ही हाथ शेष रह गया। वर्षों पश्चात् इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के युग में जब मुसलमानों में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो किसी शत्रु ने व्यंग के तौर पर तल्हा को टुण्डा कहा। इस पर एक अन्य सहाबी ने कहा हाँ टुण्डा ही है परन्तु कैसा मुबारक टुण्डा है। तुम्हें ज्ञात है तल्हा का यह हाथ रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की रक्षा में टुण्डा हुआ था। उहद के युद्धोपरान्त किसी व्यक्ति ने तल्हारज़ि. से पूछा कि जब वाण हाथ पर लगते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुख से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हारज़ि. ने उत्तर दिया दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी परन्तु मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख पर आ लगे।

परन्तु ये कुछ लोग इतनी विशाल सेना का कब तक मुक़ाबला कर सकते थे क़ाफ़िरों की सेना का एक गिरोह आगे बढ़ा और उस ने रसूले करीम (स.अ.व.) के पास के जवानों को धकेला कर पीछे कर दिया। रसूले करीम (स.अ.व.) वहां अकेले पर्वत की भांति खड़े थे कि बड़े ज़ोर से एक पत्थर आप के खोद (Security Cap लोहे की टोपी) पर लगा ख़ोद की कील आप के सर पर घुस गई और आप बेहोश होकर उन सहाबारज़ि. के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे①। तत्पश्चात् कुछ अन्य सहाबारज़ि. आप के शरीर की रक्षा करते हुए शहीद हुए और उनके शव आप के शरीर पर जा गिरे। काफ़िरों ने आप के शरीर को शवों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अतः मक्का की सेना स्वयं को पुनर्गठन के उद्देश्य से पीछे हट गई। जो सहाबा आप के पास खड़े थे और जिन्हें काफ़िरों की सेना का रेला ढकेल कर पीछे ले गया था उनमें हज़रत उमररज़ि. भी थे। जब आप ने देखा कि रणभूमि समस्त लड़ने वालों से साफ हो चुकी है तो आप को विश्वास हो गया कि रसूले करीम (स.अ.व.) शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में एक ही समय में क़ैसर तथा किस्रा का मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया था और उस का हृदय कभी नहीं घबराया और न भयभीत हुआ था। वह एक पत्थर पर बैठकर बच्चों की भांति रोने लग गया, इतने में मालिकरज़ि. नामक एक सहाबी जो इस्लामी सेना की विजय के समय पीछे हट गए थे; क्योंकि वह निराहार थे और रात से उन्होंने कुछ नहीं खाया था। जब विजय हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की ओर चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख दूर करें। वह विजय की ख़ुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमररज़ि. तक जा पहुँचे और उमररज़ि. को रोते देख कर हैरान हुए और आश्चर्य से पूछा उमर आप को क्या हुआ? इस्लाम की विजय पर आप को प्रसन्न होना चाहिए या रोना चाहिए? उमर ने उत्तर में कहा मालिक! कदाचित तुम विजय के तुरन्त बाद पीछे हट आए थे, तुम्हें मालूम नहीं कि काफ़िरों की सेना पहाड़ी के पीछे से चक्कर काटकर इस्लामी सेना पर टूट पड़ी और चूंकि मुसलमान अस्त-व्यस्त हो चुके थे, उनका मुकाबला कोई न कर सका। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कुछ सहाबा के साथ उन के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए और मुक़ाबला करते-करते शहीद हो गए। मालिकरज़ि. ने कहा उमर यदि यह बात सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं, जिस लोक में हमारा प्यारा गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिए। यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो आप के हाथ में थी जिसे आप मुख में डालने ही वाले थे उसे यह कहते हुए फेंक दिया कि हे खजूर! मालिक और स्वर्ग के मध्य तेरे अतिरिक्त और कौन सी वस्तु रोक है यह कहा और तलवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए। तीन हज़ार सेना के मुकाबले में एक व्यक्ति कर ही क्या सकता था, परन्तु एक ख़ुदा की उपासना करने वाली भावना बहुतों पर भारी होती है। मालिकरज़ि. इस निर्भयता से लड़े कि शत्रु स्तब्ध रह गया परन्तु अन्ततः घायल हुए, फिर गिरे तथा गिर कर भी शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करते रहे, जिस के परिणामस्वरूप मक्का के काफ़िरों ने आप पर इतना भयानक आक्रमण किया कि युद्ध के पश्चात् आप के शव के सत्तर टुकड़े मिले, यहां तक कि आप का शव पहचाना नहीं जाता था। अन्त में आप की बहन ने एक उंगली से पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई का शव है।

वे सहाबारज़ि. जो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुनः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुनः एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुनः एकत्र होने लगी। रसूले करीम (स.अ.व.) उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हम ने मुहम्मद (स.अ.व.) को मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुनः आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुनः शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हम ने अबू बक़ररज़ि. को भी मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू बकररज़ि. को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी हमने उमररज़ि. को भी मार दिया। तब उमररज़ि. जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अतः काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया اُعْلُ هُبَل اُعْلُ هُبَل 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर

शेष पृष्ठ 11 पर

पृष्ठ 2 का शेष

करूँगा, जिनसे यह अनुमान लगाया जा सकेगा कि सामने दिखाई देने वाली तबाही कितनी खतरनाक और भयावह हो सकती है। इन विनाशकारी हथियारों का उपयोग वास्तव में हमारे अपने ही बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के खिलाफ युद्ध के समान है।

आयरलैंड के राष्ट्रपति माइकल हिगिंस ने यह चेतावनी दी थी कि हम ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जो युद्ध की धमकियों का युग है, जिसमें कूटनीतिक प्रयासों और आपसी समझ की बजाय अराजकता, तनाव और रक्तपात को बढ़ावा दिया जा रहा है।

स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आज हर व्यक्ति अपनी बातचीत में हथियारों और विनाशकारी युद्धों का बिना किसी डर के उल्लेख करता दिखाई देता है, जिससे अशांति और बेचैनी बढ़ती जा रही है।"

इस्लाम की बुनियादी शिक्षा यह है कि मनुष्य दूसरों के लिए भी वही पसंद करे जो वह अपने लिए पसंद करता है। यह ऐसा स्वर्णिम सिद्धांत है कि यदि दुनिया इस सिद्धांत पर चलने लगे तो दुनिया सच में शांति का केंद्र बन सकती है।

जर्मन चांसलर ने भी ईरान युद्ध के खिलाफ बयान दिया है, और इस संदर्भ में मैं जिस तरह युद्ध-विरोधी हर व्यक्ति की सराहना करता हूँ, यहाँ जर्मन चांसलर की भी प्रशंसा करता हूँ, लेकिन बयानों से आगे बढ़कर व्यावहारिक कदमों की आवश्यकता है। नीतिगत मामलों में यदि व्यावहारिक कदमों का मूल्यांकन किया जाए तो वे लगभग न के बराबर हैं।

पोप लियो ने तुर्की में तीसरे विश्व युद्ध के आरंभ के बारे में बात की और कहा कि तीसरा विश्व युद्ध अब धीरे-धीरे लड़ा जा रहा है।

मैं कहता हूँ कि वास्तविक स्थिति यह है कि तीसरा विश्व युद्ध तो लड़ा जा रहा है, लेकिन लोग इसे स्वीकार करने से इंकार कर रहे हैं ताकि वे युद्ध की भयावहता से, अपने ही विचार से, बच सकें।

फिर स्पेन के प्रधानमंत्री ने कहा कि आप किसी अवैध बात का समाधान एक और अवैध बात से नहीं कर सकते। छोटी-छोटी लड़ाइयों और झड़पों के परिणामस्वरूप बड़े-बड़े विनाशकारी युद्ध शुरू हो जाते हैं। ऐसे में बहुत सावधानी और बुद्धिमानी दिखाने की आवश्यकता होती है। यदि एक पक्ष की ओर से अन्याय हो तो यह नहीं होना चाहिए कि दूसरा पक्ष भी अन्याय का रास्ता अपनाए। आज बड़ी शक्तियाँ न्याय और अंतरराष्ट्रीय कानून को पीछे छोड़ चुकी हैं। उनके लिए केवल उनके अपने हित ही सब कुछ हैं।

सरकारों का काम तो यह है कि वे जनता की भलाई के लिए कदम उठाएँ, ऐसे निर्णय करें जिनसे लोगों का जीवन आसान हो, लेकिन आज के शासक तो ऐसे काम करते दिखाई देते हैं जिनसे लोगों का जीवन कठिन हो जाए। ये शासक युद्धों की आड़ लेकर अपनी नाकामियों को छिपाने की कोशिश कर रहे हैं और इस तरह दुनिया को एक अंतहीन विनाश की ओर धकेल रहे हैं।

एक प्रसिद्ध अमेरिकी विचारक ने हाल ही में कहा है कि पश्चिम में सामान्य रूप से और अमेरिका में विशेष रूप से हर समस्या का समाधान सैन्य शक्ति को समझ लिया गया है। कूटनीति को बढ़ावा देने के बजाय युद्ध को समस्याओं का हल माना जाता है। जहाँ तक ईरान युद्ध का संबंध है, तो यह युद्ध अत्यंत पीड़ादायक परिस्थितियों की भूमिका बन रहा है। अन्याय और दोहरे मानदंड का नुकसान हर किसी को निश्चित रूप से होगा।

इस्लाम कहता है कि अत्याचारी और पीड़ित दोनों की मदद की जाए। इस्लाम बदले की आग को बुझाने की शिक्षा देता है। बदला यदि स्वीकार किया गया है तो वह केवल उसी सीमा तक है जितना कि अत्याचार किया गया हो।

दुनिया में लागू न्याय की संस्थाएँ अब विफल हो चुकी हैं। जिस तरह लीग ऑफ नेशंस विफल हुई थी, उसी तरह संयुक्त राष्ट्र भी एक विफल संस्था बन चुका है। पाँच देशों को वीटो का अधिकार देना न्याय का खून है।

कनाडा के प्रधानमंत्री ने कहा है कि आज शक्तिशाली के लिए अलग कानून हैं और कमजोर के लिए अलग कानून हैं।

मानव अधिकारों का चार्टर भी अब केवल औपचारिक कागजी कार्रवाई रह गया है। उसका कोई सम्मान बाकी नहीं रहा।

पश्चिमी राष्ट्र छोटे देशों पर शोषणकारी कार्रवाइयाँ करते हैं और इसके लिए अब एक नया बहाना बनाया गया है कि हम महिलाओं को अधिकार दिलाने आए हैं, जबकि उनका असली चेहरा यह है कि इन देशों की लड़ाइयों के कारण हजारों महिलाएँ बेबस और असहाय होकर खुले आसमान के नीचे, बिना किसी साधन-सुविधा के जीवन बिता रही हैं।

यूरोपीय संसद के एक स्पेनिश सदस्य ने कहा है कि सीरिया, इराक, लेबनान और अब ईरानइन सभी देशों पर की गई कार्रवाइयों का परिणाम अब हमारे सामने है, और हम जानते हैं कि शक्तिशाली और अत्याचारी राष्ट्र ऐसे बहाने गढ़ते हैं ताकि अपनी अन्यायपूर्ण युद्धों को उचित ठहरा सकें।

एक मुसलमान के रूप में हम जानते हैं कि कई लोग और संगठन इस्लाम का नाम लेकर अत्याचार का रास्ता अपनाते हैं। फिर मीडिया उनकी कार्रवाइयों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है और इस तरह इस्लाम के खिलाफ गलत बातें फैलती हैं। इस्लाम हो या कोई और धर्मउसे बहाना बनाकर यह कहना कि हिंसा और बर्बरता का कारण वह धर्म है, यह स्वयं अन्याय है।

सामंजस्य और न्याय के लिए प्रयास करना जमाअत अहमदिया का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है, जिसके लिए हम लगातार प्रयास करते रहते हैं। इसी महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम यह कोशिश भी करते हैं कि भले ही थोड़े ही सही, कुछ लोगों तक हमारा यह हक और न्याय का संदेश पहुँच सके। यही उद्देश्य है जिसके लिए मैंने दुनिया के बड़े नेताओं को पत्र लिखे।

मैंने इज़राइली प्रधानमंत्री को भी पत्र लिखा और उन्हें तोरात की शिक्षाएँ प्रस्तुत कीं। इसी तरह ईरानी राष्ट्रपति और अन्य मुस्लिम देशों के नेताओं को भी पत्र लिखे। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री, अमेरिका के राष्ट्रपति और चीन के राष्ट्रपति तक भी यह संदेश पहुँचाया कि वे इस पर विचार करें कि दुनिया किस तरह लगातार विनाश की ओर बढ़ रही है। अब तो मानवता के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो चुका है, लेकिन अफसोस कि ये लोग इन बातों पर ध्यान नहीं दे रहे। दुनिया के हालात साफ दिखा रहे हैं कि वे सुनना नहीं चाहते। दुनिया में बढ़ते हुए युद्ध इसी बात की ओर संकेत कर रहे हैं।

इस्लाम ने यह शिक्षा दी है कि अपनी इच्छाओं का पालन न करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम न्याय से दूर हो जाओ। पवित्र क़ुरआन ने स्पष्ट रूप से शिक्षा दी है कि दृढ़ता के साथ न्याय पर कायम रहो, और दूसरों की दुश्मनी भी तुम्हें इस बात पर मजबूर न करे कि तुम अन्याय करो। न्याय करना ही तक़वा के अधिक निकट है।

इस्लाम ने केवल सहयोगियों के अधिकार ही स्थापित नहीं किए बल्कि विरोधियों के भी अधिकार निर्धारित किए हैं। इस्लाम ने अपने अनुयायियों को यह नसीहत दी है कि यदि तुम्हें बुद्धिमानी और ज्ञान की कोई बात किसी अन्य समुदाय से मिले तो उसे अपना लो, क्योंकि वह तुम्हारी ही खोई हुई विरासत है।

दुनिया की अधिकांश आबादी आज भी शांति चाहती है, लेकिन इसके लिए हर व्यक्ति को अपना-अपना योगदान देना होगा। जैसा कि पोप साहब ने कहा है कि तीसरा विश्व युद्ध विभिन्न हिस्सों में लगभग शुरू हो चुका है। मुझे डर है कि इस वैश्विक युद्ध में जो विनाश होगा वह पिछले विश्व युद्धों की तुलना में अत्यंत भयानक होगा।

आज हम सभी का कर्तव्य है कि अपने बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए एक शांतिपूर्ण दुनिया छोड़ें और इसके लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयास करें। अन्यथा बाद की पीढ़ियाँ हमें दोष देंगी और कहेंगी कि तुमने हमारे लिए कैसी तबाह दुनिया छोड़ दी।

इस प्रकार यह पीस सिम्पोज़ियम इसी उद्देश्य के लिए एक प्रयास है। ईश्वर करे कि यह आशा की पहली किरण बन जाए और दुनिया इस समय में शांति की आवश्यकता को समझे। अल्लाह करे कि युद्ध के बादल छँट जाएँ और शांति की सुबह रोशन हो। आप सभी का एक बार फिर धन्यवाद।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण रात 7 बजकर 9 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। दुआ के बाद सभी मेहमानों को भोजन प्रस्तुत किया गया। भोजन के बाद हुज़ूर अनवर ने स्टेज पर खड़े-खड़े मुख्य मेज पर उपस्थित विशिष्ट मेहमानों को मुलाकात का सौभाग्य प्रदान किया और उनसे संक्षिप्त बातचीत की। बाद में हुज़ूर अनवर लगभग साढ़े सात बजे ऐवान-ए-मसरूर से तशरीफ़ ले गए।

(बाकी रिपोर्ट पीस सिम्पोज़ियम आगामी अंक में) (बशुक्रिया अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 23 मई 2026)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

थी कि यदि संभव हो तो ऐसी चीज़ें भी उनके लिए आपकी ओर से ही तैयार होकर जाएँ, और आपकी इच्छा रहती थी कि जो व्यक्ति जिस प्रकार के खाने का आदी हो, उसे उसी प्रकार का खाना दिया जाए। यह नाचीज़ निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में लंगर का इंतज़ाम स्वयं आपके हाथ में था, लेकिन आपके देहांत के बाद हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम ने यह व्यवस्था सदारत अंजुमन अहमदिया क़ादियान को सौंप दी। माताजी बताती हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में कुछ लोग आपसे कहते थे कि हुज़ूर को इस व्यवस्था के कारण बहुत तकलीफ़ होती है और बहुत खर्च भी होता है, इसे अपने सेवकों के हवाले कर दें, लेकिन आपने स्वीकार नहीं किया क्योंकि आपको यह आशंका रहती थी कि ऐसा न हो कि उनके हाथ में व्यवस्था जाने से किसी मेहमान को तकलीफ़ हो। यह नाचीज़ निवेदन करता है कि यह कोशिश उन लोगों की ओर से थी जो आपका बोझ हल्का करने के लिए नहीं, बल्कि दुर्भावना रखते थे और जो मदीना के मुनाफ़िक़ों की तरह आप पर लंगरखाने के खर्चों के बारे में शक करते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: "और उनमें से कुछ लोग हैं जो सदक़ात के बारे में तुम पर ताना करते हैं।"

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान
(Ahmadiyya Vocational Training Centre)
में वर्ष 2026-2027 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2026-2027 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी। अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 9 का शेष

दिया है। वही रसूले करीम (स.अ.व.) जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबूबकर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में द्वैतवाद का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा हे अल्लाह के रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰہُ اَعْلٰی وَاَجَلُّ[1] (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी। इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया। उहद के युद्ध में स्पष्ट विजय के पश्चात् एक पराजय का रूप देखने को मिला परन्तु यह युद्ध वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सच्चाई का एक महान चमत्कार पूर्ण प्रमाण था। इस युद्ध में रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को पहले सफलता प्राप्त हुई फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार आप के प्रिय चाचा हम्ज़ा[रज़ि.] युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आप[स.] भी घायल हुए और बहुत से सहाबा शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसी आत्मीय शुद्धि और ईमान के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ, जिस का उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। इस वफ़ादारी और ईमान के प्रदर्शन की कुछ घटनाएं तो पहले वर्णन हो चुकी हैं एक अन्य घटना भी उल्लेखनीय है जिस से ज्ञात होता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की संगति ने सहाबा[रज़ि.] के हृदयों में कितना दृढ़ ईमान पैदा कर दिया था। जब रसूले करीम (स.अ.व.) कुछ सहाबा को साथ लेकर पर्वत के आंचल की ओर चले गए और शत्रु पीछे हट गया तो आप ने कुछ सहाबा[रज़ि.] को आदेश दिया कि वे मैदान में जाएं और घायलों को देखें। एक सहाबी मैदान में खोज करते-करते एक घायल अन्सारी के पास पहुँचे। देखा तो उन की दशा बड़ी दयनीय थी और वह प्राण त्याग रहे थे। यह सहाबी उन के पास पहुँचे और उन्हें अस्सलामो अलैकुम कहा। उन्होंने कांपता हुआ हाथ मिलाने के लिए उठाया और उन का हाथ पकड़ कर कहा मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई भाई मुझे मिल जाए। उन्होंने उस सहाबी से पूछा कि आपकी दशा तो ख़तरनाक विदित होती है। क्या कोई सन्देश है जो आप अपने परिजनों को देना चाहते हैं? उस मरणासन्न सहाबी ने कहा हाँ ! मेरी ओर से मेरे परिजनों को सलाम कहना कि मैं तो मर रहा हूँ परन्तु अपने पीछे ख़ुदा तआला की एक पवित्र अमानत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का अस्तित्व तुम में छोड़े जा रहा हूँ। हे मेरे भाइयो और सम्बन्धियो ! वह ख़ुदा का सच्चा रसूल है। मैं आशा करता हूँ कि तुम उसकी रक्षा में अपने प्राण न्योछावर करने से संकोच नहीं करोगे तथा मेरी इस वसीयत को स्मरण रखोगे (मुअत्ता तथा ज़रक़ानी) मरने वाले मनुष्य के हृदय में अपने परिजनों को पहुँचाने के लिए हज़ारों सन्देश पैदा होते हैं परन्तु ये लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की संगति में अपने आप को इतना विस्मृत कर चुके थे कि न उन्हें अपने पुत्र याद आ रहे थे, न पत्नियां। शेष ..

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 11 June 2026 Issue No. 24

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{52} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। जंडा सिंह निवासी कलहवां ने बताया कि मैं बड़े मिर्ज़ा साहिब के पास आया-जाया करता था। एक बार बड़े मिर्ज़ा साहिब ने मुझसे कहा कि जाओ, गुलाम अहमद को बुला लाओ। एक अंग्रेज हाकिम मेरा परिचित ज़िले में आया है। उसका इरादा हो तो किसी अच्छे पद पर उसे नौकरी लगवा दूँ। जंडा सिंह कहता है कि मैं मिर्ज़ा साहिब के पास गया तो देखा कि वे चारों तरफ किताबों का ढेर लगाकर उनके बीच बैठे कुछ अध्ययन कर रहे हैं। मैंने बड़े मिर्ज़ा साहिब का संदेश पहुँचा दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए और जवाब दिया, "मैं तो नौकरी में लग गया हूँ।" बड़े मिर्ज़ा साहिब ने कहा कि अच्छा, क्या सचमुच नौकरी में लग गए हो? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा, हाँ, मैं लग गया हूँ। इस पर बड़े मिर्ज़ा साहिब ने कहा, अच्छा, यदि नौकरी में लग गए हो तो ठीक है।

यह नाचीज़ निवेदन करता है कि कलहवां, क़ादियान से दक्षिण की ओर दो मील की दूरी पर एक गाँव है और "नौकरी में लगने" से मुराद अल्लाह की नौकरी है। साथ ही यह नाचीज़ यह भी निवेदन करता है कि जंडा सिंह ने यह बात कई बार बयान की है और वह क़ादियान की वर्तमान तरक़्क़ी को देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बहुत ज़िक्र किया करता है और आपसे बहुत मुहब्बत रखता है। साथ ही यह नाचीज़ यह भी निवेदन करता है कि हमारे दादा साहिब को, क्योंकि वे परिवार में सबसे बड़े और सम्मानित थे, आम तौर पर लोग बड़े मिर्ज़ा साहिब कहा करते थे। इसी तरह स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी अक्सर उनके बारे में यही शब्द प्रयोग करते थे।

{53} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की माताजी ने बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बहुत अधिक सदका (दान) दिया करते थे और आम तौर पर इतना छिपाकर देते थे कि हमें भी पता नहीं चलता था। इस नाचीज़ ने पूछा कि आप कितना सदका दिया करते थे? माताजी ने कहा कि बहुत दिया करते थे। और अंतिम दिनों में जितना पैसा आता था उसका दसवाँ हिस्सा अलग करके सदके के लिए रख देते थे और उसी में से देते रहते थे। माताजी ने बताया कि इसका यह मतलब नहीं कि आप दसवें हिस्से से अधिक नहीं देते थे, बल्कि आप कहा करते थे कि कभी-कभी खर्च बढ़ जाने से आदमी सदके में कमी कर देता है, लेकिन अगर सदके का पैसा पहले ही अलग कर दिया जाए तो कमी नहीं होती, क्योंकि वह पैसा फिर किसी और काम में नहीं लगाया जा सकता। माताजी ने कहा कि इसी उद्देश्य से आप कुल आमदनी का दसवाँ हिस्सा अलग कर देते थे, वरना देने में तो इससे अधिक भी देते थे। इस नाचीज़ ने पूछा कि क्या आप सदका देने में अहमदी और गैर-अहमदी का कोई भेद रखते थे? माताजी ने कहा नहीं, बल्कि हर ज़रूरतमंद को देते थे। यह नाचीज़ निवेदन करता है कि उस समय क़ादियान में ऐसे अहमदी ज़रूरतमंद भी कम ही होते थे।

{54} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की माताजी ने बताया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी से कर्ज़ लेते थे तो वापस करते समय कुछ अधिक दे देते थे। इस नाचीज़ ने पूछा कि क्या आपको कोई उदाहरण याद है? माताजी ने कहा कि उस समय कोई उदाहरण याद नहीं, लेकिन आप कहा करते थे कि ऐसा ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है। और माताजी बताती हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कोई भी नेकी की बात तब तक बयान नहीं करते थे जब तक स्वयं उस पर अमल न कर लें। इस नाचीज़ ने पूछा कि क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कभी किसी को कर्ज़ भी दिया है? माताजी ने कहा हाँ, कई बार दिया है। इसी तरह एक बार मौलवी साहिब (ख़लीफ़ा प्रथम) और हकीम फ़ज़लुद्दीन साहिब भीरवी ने आपसे कर्ज़ लिया। मौलवी साहिब ने जब कर्ज़ का पैसा वापस भेजा तो आपने वापस कर दिया और संदेश भिजवाया कि क्या आप हमारे पैसे को अपने पैसे से अलग समझते हैं। मौलवी साहिब ने उसी समय हकीम फ़ज़लुद्दीन साहिब को संदेश भिजवाया कि मैंने यह गलती करके डाँट खा ली है, देखना तुम पैसा वापस मत भेजना। यह नाचीज़ निवेदन करता है कि मैंने किसी से सुना है कि मौलवी साहिब ने हकीम साहिब से यह भी कहा था कि यदि ज़रूरी ही वापस देना हो तो किसी और तरीके से दे देना।

{55} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की माताजी ने बताया कि एक बार अंतिम दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे सामने हज करने का इरादा प्रकट किया था। इसलिए मैंने आपके देहांत के बाद आपकी ओर से हज करवाया। (हज़रत माताजी ने हाफ़िज़ अहमदुल्लाह साहिब मरहूम को भेजकर हज़रत साहिब की ओर से हज-ए-बदल करवाया था) और हाफ़िज़ साहिब के सारे खर्च माताजी ने स्वयं वहन किए थे। हाफ़िज़ साहिब पुराने सहाबी थे और अब बहुत समय पहले उनका देहांत हो चुका है।

{56} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की माताजी ने बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम खाने में पक्षियों के मांस को अधिक पसंद करते थे। शुरू-शुरू में बटेर भी खाते थे, लेकिन जब प्लेग (ताऊन) की बीमारी फैली तो आपने उसका मांस खाना छोड़ दिया, क्योंकि आप कहते थे कि उसमें प्लेग का असर होता है। मछली का मांस भी हज़रत साहिब को पसंद था। आप नाश्ता नियमित रूप से नहीं करते थे, हाँ आम तौर पर सुबह दूध पी लेते थे। इस नाचीज़ ने पूछा कि क्या आपको दूध पच जाता था? माताजी ने कहा कि पचता तो नहीं था, लेकिन फिर भी पी लेते थे। माताजी ने बताया कि पकौड़े भी हज़रत साहिब को पसंद थे। एक समय में आपने सिकंजीबिन का शरबत बहुत इस्तेमाल किया था, लेकिन फिर छोड़ दिया। एक बार आपने बहुत लंबे समय तक कोई पकी हुई चीज नहीं खाई, केवल थोड़े दही के साथ रोटी लेकर खा लेते थे। कभी-कभी मक्का की रोटी भी पसंद करते थे। खाना खाते समय रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करते जाते थे, कुछ खा लेते थे और कुछ छोड़ देते थे। खाने के बाद आपके सामने बहुत से टुकड़े (चूरा) इकट्ठा हो जाते थे। एक समय आपने चाय का भी बहुत उपयोग किया था, लेकिन फिर उसे भी छोड़ दिया। माताजी ने बताया कि हज़रत साहिब बहुत कम खाना खाते थे और खाने का कोई निश्चित समय भी नहीं था। सुबह का खाना कभी-कभी बारह बजे या एक बजे भी खाते थे। शाम का खाना आम तौर पर मगरिब के बाद, लेकिन कभी-कभी पहले भी खा लेते थे। कुल मिलाकर कोई निश्चित समय नहीं था। कभी-कभी स्वयं ही खाना मंगवा लेते थे कि खाना तैयार है तो दे दो, फिर मैं काम शुरू करना है। इस नाचीज़ ने पूछा कि आप किस समय काम करते थे? माताजी ने कहा कि पूरा दिन ही काम में गुजरता था। दस बजे डाक आती थी तो आप डाक का अध्ययन करते थे और उससे पहले कभी-कभी लेखन का काम शुरू नहीं करते थे ताकि डाक की वजह से बीच में काम का सिलसिला न टूटे, लेकिन कभी पहले भी शुरू कर देते थे। यह नाचीज़ निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रोज़ाना लाहौर का "अख़बार आम" मंगवाते और नियमित रूप से पढ़ते थे। इसके अलावा अंतिम दिनों में और कोई अख़बार स्वयं नहीं मंगवाते थे। हाँ, कभी कोई भेज देता था तो वह भी पढ़ लेते थे।

{57} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की माताजी ने बताया कि पहले लंगर का इंतज़ाम हमारे घर में होता था और घर से ही सारा खाना पककर जाता था, लेकिन अंतिम वर्षों में जब काम बढ़ गया तो मैंने कहकर बाहर इंतज़ाम करवा दिया। इस नाचीज़ ने माताजी से पूछा कि क्या हज़रत साहिब कभी किसी मेहमान के लिए विशेष खाना पकाने का भी आदेश देते थे? माताजी ने कहा हाँ, कभी-कभी कहते थे कि फलाँ मेहमान आए हैं, उनके लिए यह खाना तैयार कर दो। माताजी ने बताया कि शुरू में सभी लोग लंगर का ही खाना खाते थे, चाहे मेहमान हों या यहाँ स्थायी रूप से रहने वाले हों। जो लोग यहाँ रहते थे, वे कभी-कभी अपने पसंद की कोई चीज़ अपने घरों में भी बना लेते थे, लेकिन हज़रत साहिब की यह इच्छा होती

शेष पृष्ठ 11 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad